कुदरत

कहाँ चल पड़ा ये मौत का ज़खीरा है

इंसान ने बनाया है या कुदरत का कहर है

हवायें कातिल है आज बाहर की

क्या बाहर निकलने की जरुरत है ?

अब न सहेगी कुदरत हैवानियत इंसानो की

कुदरत अब अपने सुर में है

बेघर कर दिया था बेजुबानो को जिसने

जुबान वाले आज घरो में कैद है

न की क़द्र कभी खाने की जिसने

दो वक़्त के खाने को मोहताज है

जहर ही घोलते रहे फिज़ाओ में हमेशा

कुदरत अब अपनी हिफाज़त में है

खबर लग रही अब की जरुरत क्या है

बेजुबान जानवरो का दर्द क्या है

दो चार रोटियों के लिए भी लड़ रहे सभी

बेकार किये खाने की जरुरत क्या है

सबक सीख ले आज गर सभी

फिर से कुदरत के कहर की जरूरत क्या है

कुदरत से दोस्ताना रखे , बेवजह उसे सताने की जरुरत क्या है

ये हमारी ही दुनिया है ऐसे डुबोने की जरुरत क्या है

By :-Sahil Prashar

v-2018-03-039

2nd year